भारतीय ज्ञान परंपरा का 21वीं सदी के शिक्षा, अर्थव्यवस्था, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के संदर्भ में पुनरावलोकनः कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान परिप्रेक्ष्य

दीपक जॉनसन[1]

शासकीय आदर्श महाविद्यालय, दमोह, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा (Bhartiya Gyan Parampara) के 21वीं सदी की शिक्षा, अर्थव्यवस्था, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में पुनः स्थापना और पुनर्व्याख्या की संभावनाओं का कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान के दृष्टिकोण से विश्लेषण करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करने पर बल दिया है। यह पेपर तर्क प्रस्तुत करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं है, बल्कि समसामयिक चुनौतियों के समाधान हेतु एक जीवंत स्रोत है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में निहित 64 कलाओं की अवधारणा से लेकर आधुनिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स तक, यह पेपर भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन विषयों के बीच सेतु का निर्माण करता है। अध्ययन में पाया गया कि तक्षशिला और नालंदा जैसे प्राचीन शिक्षण संस्थान आज के बहुविषयक विश्वविद्यालयों के लिए आदर्श हैं, जबकि श्रेणियों (Trade Guilds) की व्यवस्था आधुनिक स्टार्टअप और उद्यमिता संस्कृति के लिए प्रासंगिक है। यह पेपर 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे भारतीय दार्शनिक सिद्धांतों को वैश्विक सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) से जोड़ता है और निष्कर्ष निकालता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनरुत्थान न केवल सांस्कृतिक पुनर्जागरण है, बल्कि एक सशक्त आर्थिक और वैज्ञानिक रणनीति भी है।

परिचय

भारतीय ज्ञान परंपरा (Bhartiya Gyan Parampara) सहस्राब्दियों के चिंतन, प्रयोग और अनुभव का परिणाम है। यह केवल धार्मिक या आध्यात्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा, धातुकर्म, वास्तुकला, शासन, अर्थशास्त्र, भाषा विज्ञान और ललित कलाओं का विशाल भंडार समाहित है । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वतंत्रता दिवस भाषण में उल्लिखित 'पंचप्रण' संकल्पों में 'गुलामी के भाव से मुक्ति' और 'अपनी विरासत पर गर्व' के लक्ष्य इस बात को रेखांकित करते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनरुत्थान केवल शैक्षणिक आवश्यकता नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय प्राथमिकता है।

21वीं सदी की शिक्षा, अर्थव्यवस्था, विज्ञान और प्रौद्योगिकी अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रहे हैं – जलवायु परिवर्तन से लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नैतिक प्रश्नों तक, बढ़ती आर्थिक असमानता से लेकर मानसिक स्वास्थ्य संकट तक। ऐसे समय में, केवल पाश्चात्य ज्ञान प्रतिमानों पर निर्भर रहना अपर्याप्त हो सकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा, जो समग्रता (Holistic), बहुविषयक (Multidisciplinary) और मानव–केंद्रित (Human & Centric) दृष्टिकोण प्रदान करती है, इन चुनौतियों के समाधान में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

यह शोध पत्र कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य से निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करता है:

1. भारतीय ज्ञान परंपरा को 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली में किस प्रकार एकीकृत किया जा सकता है?

2. प्राचीन भारतीय आर्थिक अवधारणाएं वर्तमान अर्थव्यवस्था के लिए क्या प्रासंगिकता रखती हैं?

3. भारतीय वैज्ञानिक परंपरा आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी को कैसे समृद्ध कर सकती है?

भारतीय ज्ञान परंपराः अवधारणा और स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार 'ज्ञान', 'प्रज्ञा' और 'सत्य' की खोज रहा है। यह परंपरा इस सिद्धांत पर आधारित है कि ज्ञान का उद्देश्य केवल सूचना संग्रह नहीं, बल्कि मानव और समाज के कल्याण के लिए सार्थक उपयोग है। वेदों, उपनिषदों, दर्शनों, पुराणों, स्मृतियों और आगम ग्रंथों में ज्ञान के विविध आयामों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

[1]Corresponding author

बहुविषयक प्रकृति

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में 64 कलाओं (Arts) का उल्लेख मिलता है, जिसमें गायन, वादन, नृत्य से लेकर वास्तुकला, युद्ध कला, चिकित्सा और खगोल विज्ञान तक के विषय शामिल थे। यह बहुविषयक दृष्टिकोण आज के छम्ब् 2020 के अंतर–विषयक (Interdisciplinary) और बहु–विषयक (Multidisciplinary) शिक्षा के दृष्टिकोण से पूरी तरह मेल खाता है ।

जीवन–केंद्रित दर्शन

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल मंत्र 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' (सब सुखी हों) और 'वसुधैव कुटुम्बकम' (सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है) है। यह दर्शन आज के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) और वैश्विक एकता की अवधारणाओं को नया आयाम देता है। यह मानवता को केवल भौतिक विकास तक सीमित न रखते हुए, आध्यात्मिक और नैतिक विकास पर भी बल देता है।

21वीं सदी की शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनरावलोकन

NEP 2020 और भारतीय ज्ञान प्रणाली

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को शिक्षा के सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम में शामिल करने की सिफारिश की है। UGC के अनुसार, स्नातक और परास्नातक कार्यक्रमों में छात्रों को कुल अनिवार्य क्रेडिट का कम से कम पांच प्रतिशत IKS पाठ्यक्रमों से लेना आवश्यक है ।

यह एक महत्वपूर्ण बदलाव है जो औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली के प्रभाव को कम करने में सहायक होगा। जैसा कि ICSSR & NERC कार्यशाला की अवधारणा पत्र में उल्लेखित है, IKS का उद्देश्य 'भारतीय मानस का उपनिवेशन मुक्तिकरण' (Decolonising The Indian Mind) है ।

प्राचीन शिक्षण संस्थानः तक्षशिला और नालंदा का मॉडल

तक्षशिला और नालंदा जैसे प्राचीन विश्वविद्यालय केवल शिक्षा के केंद्र नहीं थे, बल्कि वे बहुविषयक ज्ञान के अद्वितीय संगम थे। यहां धर्म, दर्शन, चिकित्सा, गणित, खगोल विज्ञान, कानून और सैन्य विज्ञान की शिक्षा एक साथ दी जाती थी। यह मॉडल आज के विश्वविद्यालयों के लिए प्रासंगिक है जो संकीर्ण विशेषज्ञता के बजाय समग्र शिक्षा पर बल दे रहे हैं।

गुरु–शिष्य परंपरा और आधुनिक शिक्षण विधियां

भारतीय गुरु–शिष्य परंपरा व्यक्तिगत मार्गदर्शन, अनुभवात्मक शिक्षा और चरित्र निर्माण पर बल देती थी। यह आज के मेंटरशिप मॉडल, प्रोजेक्ट–आधारित शिक्षा (PBL) और मूल्य–आधारित शिक्षा के साथ पूरी तरह समरूप है। BHU के फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में इस बात पर बल दिया गया कि 21वीं सदी की शिक्षा में गुरु–शिष्य परंपरा के मूल्यों को पुनर्स्थापित किया जाए ।

भारतीय भाषाओं में शिक्षा

UGC और भारतीय भाषा समिति (BBS) की पहल पर विश्वविद्यालयों में भारतीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह कदम न केवल शिक्षा को सुलभ बनाता है, बल्कि भारतीय भाषाओं के वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली विकास में भी सहायक है।

अर्थव्यवस्था और भारतीय ज्ञान परंपरा

प्राचीन भारतीय आर्थिक मॉडल

प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था ज्ञान–आधारित (Knowledge & Driven) थी । कौटिल्य का अर्थशास्त्र, जो चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में रचा गया, राजकोषीय नीति, व्यापार, कृषि, श्रम और बाजार विनियमन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है। यह ग्रंथ आधुनिक अर्थशास्त्रियों के लिए अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय है।

श्रेणियाँ (Trade Guilds): प्राचीन स्टार्टअप इकोसिस्टम

प्राचीन भारत में श्रेणियाँ (श्रेणियाँ) व्यापार और उद्योग के महत्वपूर्ण केंद्र थीं। ये संगठन न केवल आर्थिक गतिविधियों का संचालन करते थे, बल्कि कौशल विकास, प्रशिक्षण और नवाचार के भी केंद्र थे। आधुनिक स्टार्टअप संस्कृति और उद्यमिता के लिए श्रेणी प्रणाली एक प्रेरणा स्रोत हो सकती है।

'आत्मनिर्भर भारत' और भारतीय ज्ञान परंपरा

आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत, भारतीय ज्ञान परंपरा को रोजगार और उद्यमिता से जोड़ा जा रहा है । संस्कृत विश्वविद्यालयों और प्छै केंद्रों के माध्यम से योग, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, प्राचीन गणित और ज्योतिष में पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं, जो छात्रों को न केवल रोजगार दिला रहे हैं, बल्कि उन्हें 'नौकरी प्रदाता' (Job Creators) बनने में भी सहायता कर रहे हैं ।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भारतीय ज्ञान परंपरा का योगदान

प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक उपलब्धियाँ

भारत ने गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा और धातुकर्म के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, चरक और सुश्रुत जैसे वैज्ञानिकों ने वैश्विक ज्ञान को समृद्ध किया। शून्य की अवधारणा, दशमलव प्रणाली, पाई का मान, और जटिल शल्य चिकित्सा पद्धतियाँ भारतीय योगदान के कुछ उदाहरण हैं।

आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ समन्वय

वर्तमान शोध भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ एकीकृत करने की संभावनाएं तलाश रहे हैं। 'विजडम रिवायर्ड– इंटीग्रेटिंग भारतीय ज्ञान परंपरा विद कंटेम्परारी टेक्नोलॉजीज' शीर्षक से प्रकाशित शोध बताता है कि कैसे AI और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा से जोड़ा जा सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारतीय ज्ञान परंपरा

भारतीय दर्शन और तर्कशास्त्र (न्याय, वैशेषिक) आज के AI और मशीन लर्निंग के लिए प्रासंगिक हैं। पाणिनि के अष्टाध्यायी, जो संस्कृत व्याकरण का अद्वितीय ग्रंथ है, को आधुनिक कंप्यूटर भाषा विज्ञान और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) के लिए एक मॉडल माना जाता है ।

चुनौतियाँ और समाधान

प्रमाणीकरण और आलोचनात्मक मूल्यांकन

भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान में सबसे बड़ी चुनौती इसे अतिरंजित या अवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति है। जैसा कि IIT गांधीनगर के IKS पाठ्यक्रम में बल दिया गया है, इस ज्ञान को 'गहरे स्तर पर और बिना अतिरंजना के समझना' आवश्यक है।

पाठ्यक्रम विकास और शिक्षक प्रशिक्षण

IKS को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करने के लिए गुणवत्तापूर्ण पाठ्यक्रम सामग्री और प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता है। इस दिशा में BHU और IKGPTU जैसे संस्थानों में फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम आयोजित किए जा रहे हैं।

अंतर–विषयक अनुसंधान को बढ़ावा

भारतीय ज्ञान परंपरा पर अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए ICSSR और AICTE के IKS केंद्र की पहल महत्वपूर्ण हैं। इनके माध्यम से अंतर–विषयक अनुसंधान परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा का 21वीं सदी के शिक्षा, अर्थव्यवस्था, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के संदर्भ में पुनरावलोकन केवल अतीत के प्रति श्रद्धांजलि नहीं है, बल्कि भविष्य के निर्माण की एक सशक्त रणनीति है। NEP 2020 ने इस दिशा में नींव रखी है, और विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में IKS पाठ्यक्रमों की शुरुआत हो चुकी है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की बहुविषयकता, जीवन–केंद्रित दृष्टिकोण और नैतिक मूल्य आज की वैश्विक चुनौतियों का समाधान प्रदान कर सकते हैं। यह केवल 'प्राचीन ज्ञान' नहीं है, बल्कि एक 'जीवंत परंपरा' है जो निरंतर विकसित हो रही है। आवश्यकता है इसे आधुनिक संदर्भ में व्याख्यायित करने, प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत करने और युवा पीढ़ी को इससे जोड़ने की।

2047 तक, जब भारत अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएगा, तब भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल

भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति (Global Knowledge Superpower) बनाने में सहायक होगी, बल्कि यह मानवता के समक्ष उपस्थित जटिल समस्याओं के समाधान में भी महत्वपूर्ण योगदान देगी। जैसा कि रांची विश्वविद्यालय के IKS पृष्ठ पर उल्लेखित है, भारतीय ज्ञान परंपरा का लक्ष्य हैः "Let us strive for the wisdom that leads to the welfare of all" ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Kaushik N. (2025). Wisdom Rewired: Integrating Bhartiya Gyan Parampara with Contemporary Technologies. *International Journal of Applied Research*, 11(10).

Kumar V. and Saini A. (2025). The Knowledge-Economy Continuum: India's education and business evolution. *ICSSR National Seminar on Indian Knowledge System: Education and Prosperity*. Zenodo.

ICSSR-NERC. (2025). *National Workshop on Integrating Indian Knowledge System in Researches in Social Sciences & Humanities: Concept Note*. Shillong.

IK Gujral Punjab Technical University. (2025). *One-day National Seminar on Bharatiya Gyaan Parampara: Report*. Jalandhar.

Dubey A. K. and Noronha M. (2025). Reviving Sanskrit Wisdom for Contemporary Challenges: Enhancing Employability and Innovation through Indic Knowledge Systems. *जम्बूद्वीप - Journal of Indic Studies*, 4(2).

Avinashilingam Institute. (2025). *Indian Knowledge System: Curriculum Integration Report*. Coimbatore.

Banaras Hindu University. (2025). *Faculty Development Program on Bhartiya Gyan Parampara: Programme Details*. Varanasi.

Tiwari R. P. (2025, September 16). India's roadmap to a global knowledge powerhouse. *The Daily Pioneer*.

IIT Gandhinagar. (2022). IKS 2022: Exploring Precolonial India's Treasure House of Literatures. *IITGN News*.

Ranchi University. (n.d.). *Indian Knowledge Systems: Vision and Implementation Guidelines*. Ranchi.